मुहम्मद-बिन-तुगलक के समय होने वाले विद्रोह

- 32nd lecture by.

Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE
SAHARSA.

12-05-2020.

Scanned with CamScanner

मुहम्मद - बिन - तुगलक के समय होने वाले विद्रोह

→ मुहम्मद - बिन - तुगलक के समय सबसे अधिक विद्रोह हुए जिसमें जिसमें साम्राज्य विद्रोह अकेले दक्षिण भारत में हुए। उसके काल के प्रमुख विद्रोह हैं - दक्षिण में बहाउद्दीन गुश्तास्प, मुल्तान बहरामकिश्लू तथा बंगाल में गयासुद्दीन आदि।

→ 1335 ई० में मावर में अहसान खां के विद्रोह से अमीरों द्वारा सुल्तान का खुला विरोध स्पष्ट हो गया क्योंकि विद्रोह को दबाने के लिए जो सेना भेजी गई थी वह भी विद्रोहियों के साथ हो गई।

→ मुहम्मद - बिन - तुगलक के जीवनकाल में ही सम्पूर्ण दक्षिण भारत स्वतंत्र हो गया और दक्षिण में तुगलक साम्राज्य के ध्वंसावशेषों पर तीन स्वतंत्र राज्यों - विजयनगर साम्राज्य, बहमनी सल्तनत और मदुरा की सल्तनत की स्थापना हुई।

→ मुहम्मद - बिन - तुगलक ने मिस्र के अब्बासी खलीफा से स्वीकृति पत्र प्राप्त किया तथा खुतबा एवं सिक्कों में अपने नाम के बदले खलीफाओं का नाम अंकित करवाया।

→ उसने अपने सिक्कों पर अल सुल्तान जिल्ली अल्लाह ईश्वर सुल्तान का समर्थन है आदि वाक्यों को अंकित करवाया। उलेमाओं का विरोध मुहम्मद - बिन - तुगलक के लिए परेशानी का कारण बना इसलिए सुल्तान द्वारा खलीफा के प्रति सम्मान दिखाना तथा अब्बासी खलीफा से मान्यता प्राप्त करना एक राजनीतिक कारण था।

→ उश्र एवं जकात को छोड़कर उसने शेष सभी कर समाप्त कर दिए

Scanned with CamScanner

→ डॉ० आशावादी लाल श्रीवास्तव के अनुसार :-
उसमें विरोधी तत्वों का मिश्रण था। 1351 ई० में सिन्ध के विद्रोह को दबाते हुए सुल्तान की मृत्यु हो गई।

→ बदायूनी कहता है कि सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई।

→ मुहम्मद-बिन-तुगलक के समय में चीन, ईरान, इराक, ख्वारिज्म आदि के साथ राजदूतों का आदान-प्रदान हुआ, जिससे सल्तनत की प्रतिष्ठा बढ़ी और विदेशों से आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम्पर्क में वृद्धि हुआ।

Scanned with CamScanner

अमीरों तथा अफसरों को वफादार बनाने एवं प्रशासन में सुधार के लिए मुहम्मद-बिन-तुगलक ने उनपुराने अफसरों तथा कर्मचारियों को पदच्युत कर दिया जिन पर उसने फैसले या किसी विद्रोह में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भाग लेने का संदेह था।

→ मुहम्मद-बिन-तुगलक के अमीर वर्ग के खानदानी अमीरों के अतिरिक्त कई जातियों के लोग थे जिनमें मुख्यतः मंगोल, विदेशी तथा हिन्दू भी थे। नस्ल एवं वर्ग विभेद को समाप्त करके योग्यता के आधार पर अधिकारियों की नियुक्ति करने की नीति मुहम्मद-बिन-तुगलक के समय में अपनी पूर्णता पर पहुँच गई थी।

→ शेख निजामुद्दीन चिराग-ए-दिल्ली सुल्तान के विरोधियों में से एक था। उसके उदारवादी विचारों का प्रमाण हमें कुछ जैन परम्पराओं में मिलता है, जिसके अनुसार उसने जैन विद्वान जिन प्रभु सूरि और राजशेखर का स्वागत किया।

→ मुहम्मद-बिन-तुगलक के समय में बंगाल पूर्ण रूप से दिल्ली सल्तनत से आजाद हो गया। मलिक हाजी इलियास ने सुल्तान शमसुद्दीन के नाम से स्वतंत्र शासक बना।

→ दिल्ली सुल्तानों में वह प्रथम सुल्तान था जो हिन्दुओं के त्योहारों, मुख्यतया होली में भाग लेता था।

एलफिन्सटन ने यह मत व्यक्त किया है कि - "मुहम्मद-बिन-तुगलक में पागलपन का कुछ अंश था।"

Scanned with CamScanner